Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 12, Issue 1 | May 2024 - October 2024 | pp. 25-29

आजादी का अमर पुरोधा : रुद्रदत्त मिश्रा

डॉ. प्रेमपाल यादव

सह आचार्य, इतिहास
राजकीय महाविद्यालय, नीमकाथाना (राजस्थान)

शोध सारांश

भारत की आजादी के आन्दोलन का सशस्त्र क्रान्ति भी एक महत्वपूर्ण मार्ग था। यह मार्ग जान हथेली पर रखकर चलने वालों का था, इसलिए इस मार्ग पर चलने वालों की संख्या भी सीमित रहा करती थी। अपनी सीमित संख्या के बावजूद सशस्त्र क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से लम्बे समय तक संघर्ष किया। यद्यपि तात्कालिक रूप से वे आजादी को प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाये। किन्तु उनका योगदान देश की आजादी में किसी भी रूप से कम नहीं था। प्रस्तुत शोध पत्र में आजादी के आन्दोलन को मजबूती प्रदान करने वाले इसी प्रकार के एक क्रान्तिकारी रूद्रदत्त मिश्रा के योगदान को उजागर करने का प्रयास किया गया है। शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि रूद्रदत्त मिश्रा कब और क्यों क्रान्तिकारी बना था? उसने क्रान्तिकारी मार्ग पर चलकर किस संगठन के लिए काम किया? उसका क्रान्तिकारी दौर किन-किन गतिविधियों से सम्बन्धित रहा? उसे क्रान्तिकारी मार्ग पर चलने के कारण कितने वर्षों तक अंग्रेजों की जेलों में रहना पड़ा? क्रान्तिकारी मार्ग के अवसान के बाद रूद्रदत्त की गतिविधियाँ किस क्षेत्र में जारी रही? तथा आजादी के बाद उसने जीविकोपार्जन का आधार किसे बनाया था? इत्यादि। प्रस्तुत शोध की अध्ययन सामग्री हेतु विशेष रूप से क्षेत्रीय भ्रमण किया। रूद्रदत्त मिश्रा की पुत्री डॉ. स्नेहलता मिश्रा का साक्षात्कार लिया। अजमेर में रूद्रदत्त मिश्रा चौक के शिलापट्ट से सामग्री एकत्रित की। क्रान्तिकारी साहित्य का अध्ययन किया तथा समाचार पत्रों से सामग्री जुटाई। इस सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन कर लेख तैयार किया।

संकेताक्षर—*राठ, काकोरी केस, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी, दिल्ली षड्यंत्र केस, अजमेर षड्यंत्र केस*

प्रस्तावना

आजादी के अमर पुरोधा रुद्रदत्त मिश्रा का जन्म दिल्ली जयपुर के मध्यवर्ती भू-भाग में स्थित राठ अंचल के बहरोड़ कस्बे में एक गौड़ ब्राह्मण परिवार में 31 जुलाई 1911 को हुआ था। उनके पिता का नाम मातादीन मिश्रा तथा माता का नाम महताब बाई था। महताब बाई अजमेर के नाजीर नाथूलाल शर्मा की पुत्री थी। नाथूलाल जी ने ही मातादीन को ब्यावर कोर्ट में लिपिक के पद पर लगवाया था। ब्यावर में रहते हुए ही मातादीन को रुद्रदत्त के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। रुद्रदत्त पर पिता का साया बहुत कम रहा था। जब रुद्रदत्त सात वर्ष के हुए तभी उनके पिता 'लाल बुखार' की महामारी के कारण स्वर्गवासी हो गये। मातादीन के निधन के बाद महताब बाई अपनी संतानों को लेकर अपने पिता के घर अजमेर आ गई और वहीं रहने लगी।

रुद्रदत्त की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई थी। अजमेर की तोपदड़ा स्कूल से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद रुद्रदत्त 1927-28 में ग्वालियर में अपने रिश्ते के एक चाचा आनन्द स्वरूप जी के पास रहे। आनन्द स्वरूप जी उस समय ग्वालियर महाराजा के प्राईवेट सैक्रेट्री एवं डॉक्टर हुआ करते थे। आनन्द स्वरूप के भाई लोग जिनमें मुन्नालाल जी व विशंभरदयाल जी थे, लश्कर (ग्वालियर) में रहते थे।[1]

ISSN 2348-3857

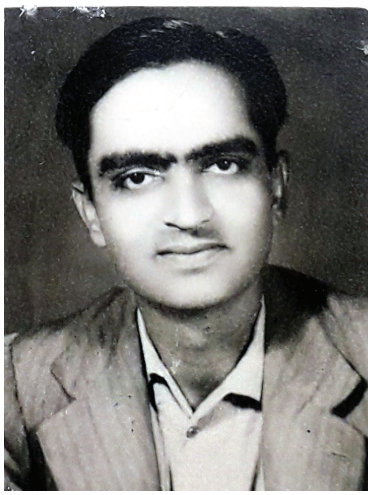

चित्र 1 : क्रान्तिकारी रुद्रदत्त मिश्रा

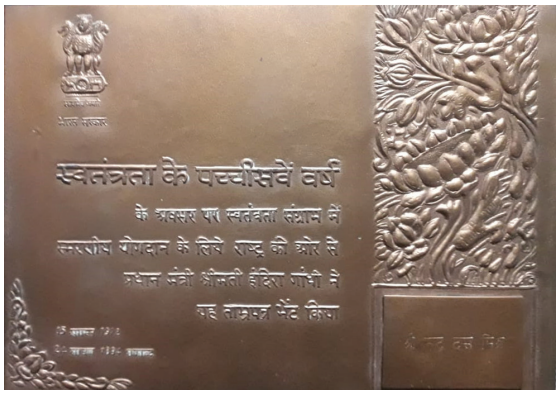

चित्र 2 : भारत सरकार से प्राप्त ताम्र प्रशस्ति पत्र

क्रान्तिकारी गतिविधियों की प्रथम जानकारी

रुद्रदत्त जब लश्कर (ग्वालियर) में रह रहे थे, तभी उस की मुलाकात क्रान्तिकारी विचारधारा के एक व्यक्ति रामनारायण से हुई। रामनारायण भारत के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के साथ काम कर चुका था। रामनारायण ने ही रुद्रदत्त को काकोरी केस व क्रान्तिकारी दल के बारे में जानकारी दी। रुद्रदत्त इस जानकारी से बहुत प्रभावित हुआ और उसके मन में भी देश को आजाद कराने की धुन सवार हो गई।[2]

क्रान्तिकारी दल के गठन की योजना

रुद्रदत्त ग्वालियर में लगभग एक वर्ष तक रहे। अजमेर वापस लौटने के पश्चात् उन्होंने अपने साथियों की मदद से एक क्रान्तिकारी दल के गठन की योजना बनाई। इस कार्य में उसका साथ रामचन्द्र व जगदीशदत्त व्यास ने दिया। अजमेर में इन युवा क्रान्तिकारियों के जोश से अर्जुनलाल सेठी जो उस समय अजमेर में रह रहे थे, बहुत प्रभावित हुए। सेठी जी ने इन युवा क्रान्तिकारियों का संपर्क हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी नामक क्रान्तिकारी दल से करवा दिया।[3] हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का सदस्य बनते ही रुद्रदत्त के संपर्क चंद्रशेखर आजाद, कुंदनलाल, मदनगोपाल यादव, कैलाशपति, विशंभरदयाल, विमल प्रसाद जैन, प्रो. नंदकिशोर निगम, वात्स्यायन, वैशपायन सरीखे भारत के प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों के साथ स्थापित हो गये।

क्रान्तिकारी दल में रुद्रदत्त की भूमिका

रुद्रदत्त जब हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से जुड़ा था, उस समय वह अजमेर के राजकीय महाविद्यालय का विद्यार्थी था। दल से जुड़ने के बाद उसे क्रान्तिकारियों का निर्देश मिला कि वह दिल्ली जाकर काम करे। निर्देश मिलते ही रुद्रदत्त पढ़ाई-लिखाई छोड़कर दिल्ली पहुँच गया और निर्देश के मुताबिक बम, पिस्तौल, गोला-बारूद आदि सामान क्रान्तिकारियों को इधर से उधर पहुँचाने लगा। ब्रिटिश खुफिया पुलिस के चंगुल से बचने के लिए उस समय क्रान्तिकारी दूसरे नामों से काम किया करते थे। रुद्रदत्त क्रान्तिकारी दल में 'कैलाश' नाम से कार्य करते थे।[4] रुद्रदत्त की भूमिका चूंकि गोला-बारूद, पिस्तौल इत्यादि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने की थी इसलिए अस्त्र-शस्त्रों से उनका नाता हमेशा बना रहता था। घर में वे इन अस्त्र-शस्त्रों को छुपाकर रखते थे। एक बार दीपावली के दिन उसकी मौसी को सफाई के दौरान घर की टांड से रुद्रदत्त के छुपाये हुए हथियार मिल गये। हथियार देखकर उसकी मौसी डर गई और पुलिस को इसकी सूचना देनी चाही। रुद्रदत्त को जैसे ही इसका पता चला, उसने झपटकर पिस्तौल मौसी के हाथ से छीन ली और उसे मौसी की कनपटी पर लगाते हुए चेतावनी दी कि "यदि यह खबर आपने पुलिस को दी तो मैं इसी पिस्तौल से आपको मार दूँगा।" रुद्रदत्त की देशभक्ति के जज्बे को देखकर उसकी मौसी ने पुलिस को कोई सूचना नहीं दी।[5] रुद्रदत्त ने हिस्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के लिए अनेक जोखिम भरे कार्य किये थे, जैसे—

1. अगस्त, 1930 में अजमेर से रिवॉल्वर, गोलियाँ, कुछ पुस्तक तथा एक बम दिल्ली पहुँचाया।

2. दिल्ली से अजमेर के क्रान्तिकारियों के लिए 100 रुपये अजमेर पहुँचाये।
3. क्रान्तिकारी विशंभरदयाल के लिए दिल्ली से एक रिवॉल्वर अजमेर लाया।
4. अजमेर के गवर्नमेंट कॉलेज पर डाका डालने के लिए अजमेर के लोको वर्कशॉप में काम करने वाले छुट्टन लाल और हजारीलाल से 40 रुपये लेकर दल को उपलब्ध करवाये।[6] इत्यादि।

अजमेर क्रान्तिकारी केन्द्र के संचालन में सहयोग

क्रान्तिकारी दौर में अजमेर भी क्रान्तिकारियों का एक मुख्य केन्द्र हुआ करता था। यहाँ क्रान्तिकारियों का सबसे बड़ा केन्द्र या गुप्त अड्डा आनासागर झील के निकट आंतड़े की पहाड़ियों के नीचे स्थापित था। यह एक ऐसी जगह थी कि जरा सा भी खटका होने पर यहाँ जमा होने वाले क्रान्तिकारी फौरन इधर-उधर की पहाड़ियों में बिखर जाते और अजमेर-मेरवाड़ा के ब्रिटिश इलाके की सीमा पार करके जयपुर या किशनगढ़ की रियासतों में चले जाते थे। इस केन्द्र का संचालन मदन गोपाल यादव और उनके साथी रुद्रदत्त, रामचन्द्र बापट, जगदीश दत्त शर्मा, प्रकाश चन्द भार्गव आदि करते थे। यह केन्द्र दूध की डेयरी के रूप में काम करता था, जिसमें बहुत सी भैंसें रखी हुई थी। यहाँ क्रान्तिकारी युवकों को बन्दूक, पिस्तौल और रिवॉल्वर चलाने की ट्रेनिंग दी जाती थी। चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथी गुप्त मंत्रणा के लिए अक्सर यहाँ आया करते थे।[7]

चित्र 3 : अजमेर के क्रान्तिकारियों के साथ रुद्रदत्त मिश्रा (पीछे की पंक्ति में दायें प्रथम)

दिल्ली षड्यंत्र केस में गिरफ्तारी

क्रान्तिकारियों की बढ़ती गतिविधियों के कारण ब्रिटिश सरकार क्रान्तिकारियों के हाथ धोकर पीछे पड़ गई। अक्टूबर, 1930 में कैलाशपति की गिरफ्तारी से अंग्रेजों को बड़ी सफलता मिली। कैलाशपति गिरफ्तार होते ही अंग्रेजों का मुखबिर बन गया। चूंकि कैलाशपति क्रान्तिकारी दल में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था और उसे क्रान्तिकारियों के सब अते-पते मालूम थे, इसलिए उसकी दी गई सूचना के आधार पर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के अनेक क्रान्तिकारियों को अंग्रेजों ने पकड़ लिया। कैलाशपति की सूचना के आधार पर ही 11 नवम्बर, 1930 को अजमेर से रुद्रदत्त को भी गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार क्रान्तिकारियों पर ब्रिटिश सरकार ने सम्मिलित रूप से वायसराय की स्पेशल ट्रेन को बम से उड़ाने, गाडोदिया स्टोर में डकैती, छः हजार बम रखने तथा भारत के सम्राट अर्थात् ब्रिटिश सम्राट के तख्त को उलटने का आरोप लगाकर दिल्ली षड्यंत्र केस नाम से मुकदमा चलाया।[8]

उक्त केस की मुकदमेबाजी के दौरान जेलों में बंद क्रान्तिकारियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया। इस दुर्व्यवहार का शिकार रुद्रदत्त भी बना। रुद्रदत्त को गिरफ्तारी के बाद पन्द्रह दिन तक अपनी कोठरी से हिलने तक नहीं दिया गया। उसे न तो नहाने दिया गया और न ही कपड़ा बदलने दिया गया। उसके कपड़े बरबाद करके उसे कटे-फटे दो कम्बल दे दिए गए।

रुद्रदत्त अपनी गिरफ्तारी एवं उक्त दुर्व्यवहार से बिल्कुल नहीं घबराया। मुकदमेबाजी के दौरान उसने अपना वही जोशीला रूख बरकरार रखा जो उसने पूर्व में अपना रखा था 01 सितम्बर, 1931 को उसने ट्रिब्यूनल के समक्ष ही सरकारी पक्ष के सरदार भाग सिंह, कोर्ट इंस्पेक्टर को थप्पड़ मार दिया। यह कार्य उसने सरदार भाग सिंह के द्वारा क्रान्तिकारियों को अपशब्द बोलने पर किया था। थप्पड़ मारने के इस जुर्म में रुद्रदत्त को 500 रुपये जुर्माने के साथ दो वर्ष की सजा हुई। बाद में सरकार ने 1933 में विशेष कारणों से बाध्य होकर रुद्रदत्त पर से षड्यंत्र केस के आरोप हटा लिये और उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया।[9]

लाहौर में रुद्रदत्त की गतिविधियाँ

दिल्ली षड्यंत्र केस से रिहा होने के बाद रुद्रदत्त हिस्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के मुख्य केन्द्र लाहौर पहुँच गया।

ISSN 2348-3857

दिखावे के तौर पर उसने लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में प्रवेश ले लिया। उसकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ लाहौर पुलिस से छिपी न रह सकी। जैसे ही पंजाब के गवर्नर को रुद्रदत्त के लाहौर में पहुँचने की खबर मिली वैसे ही उसने रुद्रदत्त को 24 घन्टे का नोटिस देकर लाहौर छोड़ने पर मजबूर कर दिया।[10]

बनारस रहकर रुद्रदत्त की गतिविधियाँ

लाहौर से निकाले जाने के बाद रुद्रदत्त हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के एक अन्य दूसरे केन्द्र बनारस पहुँच गये तथा बनारस विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। इस अध्ययनकाल में भी रुद्रदत्त ने अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ जारी रखी। बनारस से उसने अजमेर के क्रान्तिकारियों के लिए शंभुनारायण के जरिये हथियार भिजवाये। दुर्भाग्यवश शंभुनारायण अजमेर रेलवे स्टेशन पर पकड़ा गया। इस प्रकरण में फूलचन्द, पूनमचन्द, लक्ष्मीनारायण पहलवान को अजमेर से गिरफ्तार किया तथा रुद्रदत्त को बनारस से गिरफ्तार करके अजमेर लाया गया। अजमेर के उक्त केस में फूलचन्द, पूनमचन्द और रुद्रदत्त को दो-दो वर्ष की सजा हुई। शंभुनारायण ने जेल में तंग आकर आत्महत्या कर ली। अजमेर के इस केस में रुद्रदत्त को अजमेर के अंग्रेजी शासन के लिए बहुत खतरनाक माना गया था।[11]

डोगरा शूटिंग केस

अजमेर केस से मुक्ति मिली ही थी कि इसी दौरान अजमेर के अंग्रेजी शासन के अफसर डोगरा को क्रान्तिकारियों ने गोली मार दी तथा खलील गौरी को जख्मी कर दिया गया। इस प्रकरण में उसी रात रुद्रदत्त को पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन परीक्षा के कारण उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया और बाद में आरोप भी वापस ले लिए गए।

अध्यापन पेशा

रुद्रदत्त ने क्रान्तिकारी गतिविधियों के साथ-साथ अपनी पढ़ाई-लिखाई को भी रखा था। 1940 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने भारतीय एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का छः वर्ष का कोर्स करके ए.एम.एस. की डिग्री प्राप्त की। क्रान्तिकारी गतिविधियों के अवसान के बाद रुद्रदत्त ने अध्यापन का पेशा अपना लिया। 1941 में वे लश्कर (ग्वालियर) के राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज में अध्यापक बन गए। 1942 में वे अपनी गृह रियासत अलवर आ गये तथा बर्डोद के राजकीय भीमराज हाई स्कूल में अध्यापक बन गये। ब्रिटिश सरकार रुद्रदत्त के अध्यापन कार्य से भी भयभीत रहती थी। ब्रिटिश सरकार को जैसे ही इसका पता चला कि रुद्रदत्त बर्डोद में अध्यापन कार्य करवा रहे हैं, वैसे ही उसने अलवर रियासत पर दबाव डालकर उसे नौकरी से हटवा दिया। नौकरी से हटाये जाने के बाद वे पुनः अजमेर आ गये।[12]

चित्र 4 : बर्डोद का सरकारी स्कूल जहां रूद्रदत्त ने अध्यापन कार्य करवाया

चित्र 5 : अजमेर स्थित रूद्रदत्त मिश्रा सर्किल

खुली हवा में सांस

1947 में देश आजाद हुआ। आजाद भारत में रुद्रदत्त ने औषधालय अधिकारी के तौर पर 1971 तक काम किया। देश की स्थितियों पर हमेशा उनकी पैनी दृष्टि लगी रहती थी। वे देश के हालातों के संदर्भ में अपने लेख विभिन्न समाचार पत्रों

में भेजते रहते थे। रूद्रदत्त मिश्रा अपने जीवन के अन्तिम दिनों में हृदय रोग से पीड़ित हो गए थे। उनका कई अच्छे डॉक्टरों ने इलाज किया। वे स्वयं भी चिकित्सक थे, इसलिए नाक से ऑक्सीजन लेने की चिकित्सा एवं दूसरे अन्य इलाज वे स्वयं भी कर लेते थे। हृदय रोग के कारण उनकी हालत लगातार खराब होती गई। 4 जनवरी, 1980 को आजादी के अमर पुरोधा ने अपनी अंतिम सांस ली। रूद्रदत्त अपने पीछे अपनी माँ श्रीमती महताब बाई, पत्नी रमा और दो पुत्रियाँ प्रेमलता एवं डॉ. स्नेहलता को छोड़ गए थे। उनकी मृत्यु के बाद श्रीमती महताब बाई एवं उनकी पत्नी रमा भी कुछ समय बाद चल बसी। दो पुत्रियों में से एक पुत्री प्रेमलता का भी देहावसान हो चुका है। वर्तमान में डॉ. स्नेहलता मिश्रा रूद्रदत्त के घर की जिम्मेदारी सम्भाले हुए है।

निष्कर्ष

रुद्रदत्त के उपरोक्त क्रान्तिकारी जीवनकाल के विवरण से स्पष्ट है कि भारत के आजादी के आन्दोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। रूद्रदत्त के क्रान्तिकारी जीवनकाल से विदित होता है कि वे अपने अध्ययनकाल में ही क्रान्तिकारी बन गये थे। वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के मजबूत सिपाही थे। उक्त क्रान्तिकारी दल में उनकी भूमिका क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम देने के लिए क्रान्तिकारियों के लिए गोला-बारूद, अस्त्र-शस्त्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने की रही थी। रूद्रदत्त की इन क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हें अंग्रेजी शासन के लिए बहुत खतरनाक मानती थी। रूदद्रत को क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण लगभग पाँच वर्षों तक अंग्रेजों की विभिन्न जेलों में बंद रहना पड़ा था। जेलों में उनके साथ बहुत ही अमानवीय व्यवहार किया गया। रूद्रदत्त की क्रान्तिकारी गतिविधियाँ उनकी बार-बार गिरफ्तारियों की बावजूद भी जारी रही थी। क्रान्तिकारी घटनाओं के अवसान के बाद उन्होंने शिक्षा के माध्यम से युवाओं को तैयार करने का कार्य किया। ब्रिटिश सरकार रूद्रदत्त के इस कार्य में भी बाधा डालती रही। आजादी के बाद रूद्रदत्त ने अलवर में जिला आयुर्वेद अधिकारी के पद पर लम्बे समय तक काम किया। 4 जनवरी, 1980 को अजमेर में भारत के इस महान क्रान्तिकारी ने अपनी अंतिम सांस ली।

संदर्भ सूची

1. साक्षात्कारः डॉ. स्नेहलता मिश्रा पुत्री स्व. रुद्रदत्त मिश्रा, उम्र 78 वर्ष, निवासी-अजमेर, दिनांक 21.07.2024
2. दैनिक नवज्योति, अजमेर, मंगलवार 4 जनवरी, 1994, पृ.सं. 7 'अंग्रेजों के लिए खतरनाक थे रुद्रदत्त'
3. जैन, रूपवती एवं जैन, विमल प्रसाद, क्रान्तिकारी जीवन की कुछ झलकियाँ, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003, पृ.सं. 106
4. चमनलाल (सं.), क्रान्तिकारी भगतसिंह 'अभ्युदय' और 'भविष्य', लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहाबाद, 2017, पृ.सं. 442-43
5. साक्षात्कार : डॉ. स्नेहलता मिश्रा, पूर्वोक्त
6. यादव, डॉ. प्रेमपाल, राठ क्षेत्र का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन : प्रारम्भिक काल से 1947 तक, राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर के समाज विज्ञान के अन्तर्गत पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, 2022, पृ.सं. 137
7. जोशी, सुमनेश, राजस्थान में स्वतंत्रता के सेनानी, ग्रन्थागार, जयपुर, स्वतंत्रता के रजत जयन्ती वर्ष का प्रकाशन, पृ.सं. 381
8. दैनिक नवज्योति, अजमेर, मंगलवार, 4 जनवरी, 1994, पृ.सं. 7
9. जैन, रूपवती एवं जैन, विमल प्रसाद, पूर्वोक्त, पृ.सं. 107
10. दैनिक नवज्योति, अजमेर, मंगलवार, 4 जनवरी, 1994, पृ.सं. 7
11. यादव, डॉ. प्रेमपाल, पूर्वोक्त, पृ.सं. 139
12. जैन, रूपवती एवं जैन, विमल प्रसाद, पूर्वोक्त, पृ.सं. 108